पाठ का परिचय (Hanhout) जहाँ पहिया है

यह पाठ एक रिपोर्ट के रूप में प्रस्तुत किया गया है। लेखक पी. साईनाथ तमिलनाडु के एक जिले पुडुकोट्टई के बारे में बात कर रहे हैं यहाँ की स्त्रियाँ समाज में परिवर्तन लाईं हैं, लेखक दुविधा में सोचता है कि क्या साइकिल चलाना एक सामाजिक आंदोलन हो सकता है? लेखक अपने ही प्रश्न का उत्तर देते हुए कहता है कि बहुत अजीब सी बात है क्योंकि एक साइकिल का पहिया किस तरह से समाज में बदलाव ला सकता है? कैसे एक आंदोलन का रूप ले लेता है?

लेखक इस रिपोर्ट के द्वारा बताते हैं कि जंजीरो द्वारा समाज में फैली हुई रूढ़ियाँ संकेत कर रही हैं कि हमारे पुरुष प्रधान समाज में नारी को हमेशा से दबना पड़ा है। पर जब वह दमित नारी कुछ करने की ठानती है, तो उसे ये ज़ंजीरें लगती हैं।

तमिलनाडु की महिलाओं ने इन्ही जंजीरों को तोड़ने के लिये साइकिल चलाना शुरू किया। साइकिल सीखी एक महिला ने लेखक को बताया कि उस पर साइकिल चलाने के कारण लोगो ने व्यंग्य किए,पर उसने ध्यान नहीं दिया।

लेखक बताते हैं कि फातिमा नामक एक महिला को साइकिल का इतना चाव था कि वह रोज़ आधा घंटा किराये पर साइकिल लेती थी, गरीब होने के कारण वह साइकिल खरीद नहीं सकती थी। वहाँ लगभग सभी महिलाएँ साइकिल चलाती थीं।

1992 में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर 1500 महिलाओ ने साइकिल चलाई। वे महिलाएँ जो पहले पिता या भाई पर आश्रित थी, अब आसानी से कहीं भी आ जा सकती थीं। इस आंदोलन ने महिलाओं के न सिर्फ आर्थिक पक्ष को मजबूत किया बल्कि उनमें एक नए आत्मविश्वास का संचार भी किया।

पुरुष वर्ग को इससे एतराज़ नहीं होना चहिए पर यदि होता है तो भी यहाँ की महिलाएँ इसकी परवाह नहीं करतीं ।